17

सामाजिक परिवर्तन के कारक

आप सामाजिक परिवर्तन की धारणा और इससे संबद्ध सिद्धान्तों से पूर्व से ही परिचित हैं। परिवर्तन सभी मानव समाजों (समुदायों) और सभी समयों (कालों) में घटित होता रहता है। कभी-कभी जब यह अचानक होता है तब पुरानी पद्धति को पलटने के लिए एक क्रांति होती है। किसी समय यह धीरे-धीरे होता है और मुश्किल से दिखाई देता है। यदि परिवर्तन अपने आप नहीं होता तो यह कुछ निश्चित तत्वों से प्रेरित होता है। अतएव, एक समाजशास्त्री को उन तत्वों को जान और पढ लेना महत्वपूर्ण होता है जो या तो उसे प्रेरित और उत्साहित करते हैं अथवा परिवर्तन को रोकते हैं। इस पाठ में हम परिवर्तन के तत्वों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप,

- सामाजिक परिवर्तन की क्रियाविधि का वर्णन कर सकेंगे,
- सामाजिक परिवर्तन को रेखांकित करने वाले कारणों की पहचान कर सकेंगे,
- उन विभिन्न तत्वों की भूमिकाओं की समालोचना कर सकेंगे जिनसे समाज में परिवर्तन आता है।

17.1 सामजिक परिवर्तन के कारक

सामाजिक परिवर्तन एक जटिल और बहुमुखी प्रक्रम है। क्योंकि एक क्षेत्र में हुआ परिवर्तन सामाजिक जीवन के दूसरे क्षेत्रों को प्रभावित करता है इसलिए तब यह

वांछनीय होगा कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं का समन्वित दृष्टिकोण ग्रहण किया जाए। इससे उन विभिन्न तत्वों की भूमिका को स्पष्ट रूप से समझने में सुविधा होगी जिनका इस प्रक्रिया पर सामूहिक प्रभाव पड़ता है। तभी हम घटित होने वाले विभिन्न परिवर्तनों की सराहना कर सकेंगे और उन्हें समझ सकेंगे और इन परिवर्तनों में निहित विभिन्न तत्वों के समवायों एवं कारक प्रभावों की पहचान कर सकेंगे।

सामाजिक परिवर्तन विभिन्न तत्वों (कारकों) के कारण घटित होते हैं। इनमें से कुछ तत्व निम्नानुसार हैं:

(अ) आंतरजनित (संबंधित समाज के आंतरिक); और (ब) बहिर्जनित।

आंतरिक तत्वों का संबंध मूल ढाँचागत सुविधाओं, लोगों (समुदाय) में उनका विभाजन तथा समुदाय की उन तक पहुँच से है। सामाजिक परिवर्तन पुराने और युवा, साक्षर और निरक्षर, शहरी और ग्रामीणों के भिन्नतापूर्ण जीवन-मूल्यों के कारण उत्पन्न अन्तर्क्रिया और संघर्ष से घटित होते हैं।

परिवर्तन के बाहरी तत्व एक समाज की उन शक्तियों के प्रभाव पर बल देते हैं जो मानव के बलबूते के बाहर हैं जैसे प्राकृतिक आपदा या प्रकोप तथा प्रौद्योगिकी में अप्रत्यासित विकास। अब हम उन तत्वों को लेते हैं जो सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करते हैं। हमें इस पाठ में जिन तत्वों का अध्ययन करना है, वे निम्नांकित हैं:

(अ) जन्म-मृत्यु की सांख्यिकी संबंधी (डेमोग्राफिक)
(ब) प्रौद्योगिकीय
(स) सांस्कृतिक
(द) राजनैतिक
(ई) आर्थिक
(फ) शैक्षिक

17.2 सामाजिक परिवर्तन के जन्म–मृत्यु सांख्यिकीय (डेमोग्रापिफक) तत्व।

जन्म-मृत्यु सांख्यिकीय तत्वों (डेमोग्राफिक फैक्टर्स) से हमारा तात्पर्य उन तत्वों से है जो भावी पीढ़ियों की संख्या, रचना, चुनाव और आनुवंशिक गुणों का निर्धारण करते हैं।

'संख्या' और 'प्रकार' दोनों रूपों में, जनसंख्या परिवर्तन का समाज पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। जब जनसंख्या बढ़ती अथवा घटती है तो उसका आकार और प्रकार

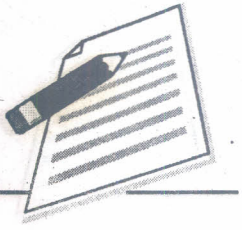

(रचना) दोनों बदलते हैं। जनसंख्या का आकार बदलने से (ज्यादा/कम होने से) लोगों के आर्थिक जीवन (जीवनस्तर) में अंतर आ सकता है, जो आगे चलकर मानव जीवन के अन्य विविध पहलुओं (सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक) में परिवर्तन ला सकता है।

तीव्र गति से और लगातार जीवन और मृत्यु की घटती हुई दरों के कारण भारी सामाजिक बदलाव आया है। स्वच्छता और स्वास्थय की सुधरी हुई सुविधाओं के कारण भारत में जनसंख्या के क्षेत्र में नाटकीय वृद्धि हुई है। जनसंख्या में इस असाधारण वृद्धि के कारण अनेक सामाजिक समस्याओं जैसे- बेरोजगारी, बाल श्रम, झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्रों के फैलाव, अपराध-दर तथा सामाजिक तनाव आदि, में वृद्धि हुई है।

मृत्यु-दर में कमी आने से सदियों पहले की अपेक्षा जनसंख्या और बढ़ी है। इसके अतिरिक्त बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं की सुलभता के कारण लोगों को बूढ़े होने पर भी सक्रिय बने रहने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ है। इससे सामाजिक दृष्टिकोण और विश्वासों में स्पष्ट दिखाई देने वाला परिवर्तन आया है।

जब जनसंख्या में वृद्धि, जीवन-स्तर के समक्ष एक चुनौती बनती है तो इससे लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन प्रेरित होता है। लोग अधिक खुले मन से गर्भ-निरोधकों का प्रयोग करते हैं, एक बच्चे के परिवार के आदर्श को अपनाते हैं और किन्हीं-किन्हीं दम्पत्तियों द्वारा तो बस एक बच्चा गोद ले लेने का ही निर्णय ले लिया जाता है, ऐसा देखा गया है।

यदि हमने जन्म-दर में तुलनात्मक कमी लाकर देखा होता तो इसका अर्थ यह होता कि हमारा जीवन-स्तर अधिक ऊँचा होता, महिलाओं को बार-बार बच्चा धारण करने की कष्टसाध्य अवस्था से मुक्ति मिलती और छोटे बच्चों की और बढ़िया देख भाल के साथ-साथ संभवत: एक अधिक स्वस्थ समाज का निर्माण होता। वास्तव में, उस स्थिति में कुछ कम संख्या में नवयुवक कार्य करने के लिए उपलब्ध होंगे जो वृद्ध होती हुई बड़ी जनसंख्या का भरण पोषण करेंगे।

जनसंख्या वृद्धि, शारीरिक स्वास्थ्य के स्तर तथा लोगों की जीवनीशक्ति के मध्य भी एक खास संबंध है। भोजन करने वाले मुखों की वृद्धि के साथ ही गहन कुपोषण और तत्संबंधी रोगों में वृद्धि होना सहज है। इनसे पुन: शारीरिक सुस्ती, अक्षमता, उदासीनता तथा साहस में कमी आती है। इन सब का प्रभाव जनसंख्या की गुणवत्ता, सामाजिक ढाँचे तथा सामजिक संस्थाओं पर भी पड़ता है।

भारत के संदर्भ में हम देखते हैं कि जनसंख्या-वृद्धि का परिणाम बेरोजगारी, गरीबी, शहरीकरण (शहरी आबादी में वृद्धि) आदि में पाया जाता है। इसके प्रतिफल के रूप में समुचित सुविधाओं का अभाव, एकल परिवारों की वृद्धि और ओवरटाइम (निश्चित समय से ज्यादा देर काम) ने स्पष्ट तौर पर सामाजिक संबंधों को बदल डाला है।

पाठगत प्रश्न 17.1

'सही' या 'गलत' के रूप में उत्तर दीजिए।

(अ) सुधरी हुई स्वास्थ्य-सुविधाओं और स्वच्छतापूर्ण स्थितियों से जनसंख्या में वृद्धि होती है।

(ब) जन्म-दर में गिरावट से जीवन-स्तर में गिरावट आएगी।

17.3 प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन के एक तत्व के रूप में

प्रोद्योगिकी प्रगति ने प्राय: समाज में दूरगामी परिवर्तन किए हैं। मानव समाजों में परिवर्तन और विकास को प्रोद्योगिकी में विकास और बदलाव के कारण के रूप में देखा गया है।

समाजशास्त्री कहते हैं, "प्रौद्योगिकी हमारे परिवेश में परिवर्तन लाकर समाज को बदलती है और फिर हम इसके अनुसार बदल जाते हैं। यह परिवर्तन, प्राय: भौतिक परिवेश अथवा वातावरण में होता है और इन परिवर्तनों से हम जो तालमेल बिठाते हैं उससे बहुधा, हमारे रीति-रिवाजों और सामाजिक संस्थाओं में सुधार आ जाता है।

पहले, प्रौद्योगिकी सरल थी और समाज भी सरल और साधारण थे। परंपरागत समाज शारीरिक श्रम से जाना-पहचाना जाता था और परिवार उत्पादन की एक इकाई था। उत्पादन मानव और पशु शक्ति पर आधारित था और वह पारिवारिक उपभोग के लिए होता था। तब न तो आर्थिक लेनदेन में लाभ का उद्देश्य प्रमुख होता था और न जो कुछ भी पैदा होता था वह बाजार में लाया जाता था।

नवीं सदी के मध्य के बाद, औद्योगिक क्रांति और औद्योगिकीकरण ने एक सुनिश्चित स्वरूप धारण किया। प्रौद्योगिकी के दृष्टिकोण से, उत्पादन संगठन ने कुछ खास-खास बातें विकसित कीं। इस प्रणाली में परिवेश अथवा वातावरण द्वारा नियंत्रित एवं प्रभावित होने के बजाय मानव ने उसे नियंत्रित करने की कोशिश की। अर्थ-व्यवस्था,

विभेदिकरण, श्रम के पेचीदे विभाजन, गहन उत्पादन और उत्पादन की एक यांत्रिक प्रणाली पर आधारित होना प्रारंभ हो गई। बड़ी बड़ी कम्पनियाँ और निगम अस्तित्व में आये जिनमें से कुछ ने कालान्तर में बहुराष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लिया। औद्योगिक समाज अधिक पेचीदे और पूर्ववर्ती सरल समाजों से बहुत अलग तरह के हैं।

इन समाजों में-

1. सरल समाजों (सोसाइटी) के श्रम के आदर्श की अपेक्षा पूंजी की महत्ता हो गई।
2. परिवार के स्थानपर उत्पादन की इकाईयों के रूप में फैक्टरियाँ उठ खड़ी हुईं।
3. मानव और पशु-शक्ति के द्वारा उत्पादित ऊर्जा के बजाय भाप, बिजली तथा अणु शक्ति का प्रयोग होने लगा।
4. मानव और पशु-श्रम के स्थान पर मशीनों का प्रयोग होने लगा।
5. उत्पादन का लक्ष्य केवल परिवार का उपभोग ही नहीं रहा, वह बाजार में विनिमय तथा लाभ बन गया।
6. स्थानीय बाजार के बजाए विश्व बाजार का विकास हुआ और
7. प्रगतिशील परिवहन, और संचार के साधन तथा मुद्रा (करेंसी) आधारित अर्थ-व्यवस्था लागू हुई।

आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा मानव द्वारा निर्मित स्थितियों ने उत्पादन की प्रणाली और गुणवत्ता को ही नहीं बदला अपितु उत्पादन-संबंधों को भी बदल डाला है। वर्तमान औद्योगिक संबंधों ने कम्पनियों, निगमों, बाजारों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, बैंकों, और औद्योगिक श्रमिक-संघों को भी जन्म दिया है।

पाठगत प्रश्न 17.2

1. सामने के कोष्ठक में से उपयुक्त शब्द द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

(अ) परंपरागत समाज .....श्रम से जाना-पहचाना जाता था। (यन्त्र द्वारा किये गये, हाथ द्वारा किये गये)

(ब) औद्योगिक समाज में उत्पादन ..... के लिए होता है। (लाभ, पारिवारिक उपभोग)

(स) औद्योगिकीकरण ने .....बाजार के विकास का मार्ग दिखाया है। (स्थानीय, वैश्विक)

17.4 सामाजिक परिवर्तन के सांस्कृतिक तत्व

सांस्कृतिक तत्वों से हमारा मतलब प्रमुख रूप से विचारों, ज्ञान, जीवन-मूल्यों, विश्वासों, आविष्कारों तथा विनिमय से है। संस्कृति आविष्कारों और खोजों को आधार प्रदान करती है।

सामाजिक प्रथाएं, परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से नैतिक मूल्यों से बनती हैं। सामाजिक समूह के द्वारा जीवन-मूल्यों अथवा विश्वासों में घटित कोई भी परिवर्तन सामाजिक संस्थाओं को प्रभावित करता है। इसका उदाहरण यह है कि भारत में एकल परिवार की वृद्धि ने पारिवारिक प्रणाली को विशेष रूप से बदल दिया है। धीरे-धीरे, सम्मिलित परिवार की प्रथा विच्छिन्न हो गई और इससे परिवारों में पारस्परिक संबंध बदल गए हैं।

नए सामाजिक मूल्यों और विश्वासों के द्वारा भी सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है। पुराने और नए जीवन-मूल्यों के बीच संघर्ष द्वारा पूर्णत: एक नवीन मूल्य-प्रणाली के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होता है। उदाहरणत: भारत में मुगलों के शासन में, सूफियों ने हिन्दी में लिखना आरंभ किया। इससे हिंदी साहित्य का विकास हुआ। हिन्दी और फारसी की संकर प्रजाति के रूप में उर्दू उत्पन्न हुई। इस नई भाषा में अरबी के भी शब्द घुलमिल गए। मुगल सम्राटों में सबसे शक्तिशाली बादशाह अकबर ने हिन्दू और इस्लाम दोनों धर्मों के मिले जुले रूप में ''दीन-ए-इलाही'' नामक विचार को राज्य-धर्म के रूप में चलाया। इसके अलावा, हिन्दू और मुसलमान दोनों शासकों ने साक्षरता का महत्व समझा और दोनों समुदायों के लोगों में निहित कलात्मक क्षमताओं को पहचाना। इस्लाम के उपदेशों ने 'कबीर' और ''नानक'' को भारी प्रभावित किया। समाजशास्त्रियों ने सामाजिक परिवर्तन लाने में सांस्कृतिक तत्वों की भूमिका पर विचार किया है। एक ओर वे धर्मों और सामाजिक ढाँचे (संरचना) के बीच अन्तर्संबंधों, को संस्कृति के एक पहलू के रूप में मानते हैं तो दूसरी ओर वे विभिन्न धर्मों की आचार-संहिताओं और उनकी आर्थिक प्रणाली की प्रकृति के प्रभाव का विश्लेषण करते हैं।

एक निष्कर्ष यह है कि हिन्दू, बौद्ध और इस्लाम धर्म की आचार संहिताओं ने उस आवश्यक निपुणता तथा समझ का विकास नहीं किया जिसकी पूंजीवाद के विकास के लिए आवश्यकता थी। इन धर्मों से संबंधित संस्कृतियाँ, परलोक प्राप्ति के बारे में अधिक ध्यान देती थी अत:, उन्होंने आर्थिक विकास और भौतिक उपलब्धियों पर बल नहीं दिया।

इसके विपरीत, प्रोटेस्टेंट मत की आचार-संहिता ने ''यही संसार सार है'' के पहलू पर

बल दिया जैसे यह कि व्यक्ति को इस संसार में रहते हुए परिश्रम करना चाहिए, धन इक्ट्ठा करना चाहिए, उसे व्यापार में लगाना चाहिए, समय का मूल्य समझना चाहिए और उपलब्धिमूलक लक्ष्यों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। पश्चिमी यूरोप में प्रोटेस्टेंट विचार धारा में निहित इन जीवन-मूल्यों ने पूंजीवाद की भावना को मार्ग दिखाया। इस भांति हमारे धार्मिक विश्वासों और हमारी संस्थाओं के स्वरूप पर पड़े उनके प्रभावों के बीच एक अन्तर्संबंध स्पष्ट दिखाई देता है।

विभिन्न समाजों के बीच सांस्कृतिक संपर्क के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन घटित होते हैं। सामाजिक प्रसरण सामाजिक परिवर्तन की एक महत्वपूर्ण यांत्रिक प्रक्रिया है। एक समाज दूसरे समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं को लंबे संपर्कों के माध्यम से अपना लेता है जैसे कि यात्रा, व्यापार और वाणिज्य तथा कुछ अचानक घटित घटनाऐं जैसे कि युद्ध, जहाँ नई और अभी तक गुप्त रही तकनीकें स्वत: भेद खोल देती हैं।

सांस्कृतिक विचारधारएं और नवीन प्रौद्योगिकी उस समय आदान की जाती और अपनाई जाती हैं। जब समाजों को लगता है कि उन्हें एक कमी अथवा एक अनुभूत आवश्यकता की पूर्ति करनी है। आधुनिक बनने की कोशिश में, विकासशील देशों और समाजों द्वारा, विकसित समाज के सांस्कृतिक तत्वों को अपनाया जाना आमतौर पर देखने में आता है। सांस्कृतिक तत्वों का प्रसार दो या दो से ज्यादा संस्कृतियों के सदस्यों के बीच व्यक्तिगत संपर्कों और अंतरक्रियाओं से भी होता है। इसे, यूनानी, मुस्लिम और ब्रिटिश लोगों के साथ लगातार संपर्कों के कारण भारतीय समाज में होने वाले परिवर्तनों में भली-भांति देखा जा सकता है। भारतीय संगीत और वास्तुकला इस्लाम से भारी प्रभावित हुए। फारसी संगीत के प्रभाव से 'खयाल' जैसा नया 'राग' और तबला और सितार जैसे वाद्ययंत्र विकसित हुए। वास्तुकला में 'इन्डो-सार्सनिक' शैली चल पड़ा जिसमें खुली जगह के अन्त:कक्ष, बड़े-बड़े गुंबद, मेहराब और मीनारें होती हैं। हिंदुओं के रहस्यवाद से सूफीमत गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। जबकि, इसलाम के विचारों में ऐकेश्वरवाद ने भारतीय समाज को प्रभावित किया, विशेष रूप से भक्ति आंदोलन के प्रवर्तकों को, जैसे कबीरदास को।

सामाजिक प्रसार जन संचार माध्यमों के द्वारा भी होता है क्योंकि वह वड़े जनसमुदाय तक सूचनाओं के प्रसारण का कार्य करते हैं। इसने परिवर्तन की प्रक्रिया में एक-एक संस्कृति के तत्वों को सुदूरवर्ती लोगों में फैलाकर गतिशील बनाया है और इस प्रकार सांस्कृतिक आधुनिकता प्रतिफलित हुई है। इस संश्लेषण का परिणाम एक ऐसी नए प्रकार की संस्कृति का उदय है, जिसमें वर्तमान और परंपरागत दोनों के तत्व मौजूद हैं। लोकगीत और 'पश्चिमी संगीत' दोनों से एक नए प्रकार का लोकप्रिय मिला-जुला संगीत पैदा हुआ है।

कैसे भी हो, यह जानना रोचक है कि जब सांस्कृतिक विस्तार ने बड़ी तेजी से लोगों के भौतिक जीवन को बदला है तो अ-भौतिक पहलू जैसे, धर्म, आदर्श, विचारधारा और विश्वास में बदलाव की गति धीमी रही है।

इस प्रक्रम को "सांस्कृतिक पिछड़ापन" काहा जाता है। जब अभौतिक संस्कृति शीघ्रता से भौतिक परिवर्तनों से तालमेल नहीं रख पाती तो दोनों में से एक में पिछड़ापन घटित होता है। आधुनिक समाजों में, जहाँ जीवन के भौतिक पहलू संस्कृति के अभौतिक पहलुओं की अपेक्षा अधिक तेजी चाल से बदलते हैं, तालमेल की समस्या को इस धारणा के द्वारा समझाया जा सकता है। सभी समाजों को इन परिवर्तनों के साथ तालमेल बैठाने की आवश्यकता होती है। जो समाज संस्कृति के अभौतिक पहलू, भौतिक पहलुओं का शांति ओर सामाजिक समरसता की ओर बढ़ने के लिए मार्गदर्शन करते हैं, वे दूसरों की अपेक्षा अधिक प्रगति करते देखे गए हैं।

पाठगत प्रश्न 17.3

एक या दो शब्दों में उत्तर लिखिए

(अ) अकबर द्वारा चलाए गए धर्म का क्या नाम था?

(ब) रीति रिवाजों और परम्पराओं को एक समाज से दूसरे में पहुँचाने के लिए किस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग होता है।

(स) संस्कृति के अभौतिक पहलू क्या हैं?

17.5 सामाजिक परिवर्तन के राजनैतिक कारक

इस पाठ में हम सामाजिक परिवर्तन लाने में राज्य और विधान की भूमिका का परीक्षण करेंगे:

विधि या कानून: कानून समाज में सामाजिक-आर्थिक तथा राजनैतिक परिवर्तन के एक उपकरण का कार्य करती है। क्योंकि कानून राज्य द्वारा समर्थित होता है और प्रकृति से सबल (बल पूर्वक लागू की जाने वाली) होता है। अत: व्यक्ति उसके अनुकूल चलता है।

1. कानून व्यक्तियों के विभिन्न समूहों और उनकी विविध सांस्कृतिक और व्यावहारिक पद्धतियों के बीच एक निश्चित सीमा तक व्यवहार की समानता सुनिश्चित करता है।

2. विधि या कानून सामाजिक बुराइयों का दमन करने और समाज के छोटे और कमजोर वर्ग के लोगों को ऊपर उठाने की भी व्यवस्था करता है। भारत में, कानून समाज के कमजोर वर्गों, विशेष रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्ग के लोगों के हितों की रक्षा करता है। कानून महिलाओं, बच्चों तथा समाज के अन्य सुविधा-वंचित वर्गों के हितों की भी रक्षा करता है।

3. कानून समाज की क्रियाओं के पुनर्निर्माण का कार्य करता है। वह बहुत पुरानी रूढ़ियों, रीति-रिवाजों को जो समाज की स्थिरता और प्रगति में बाधक या प्रतिकूल समझी जाती हैं, बदलने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार 1829 में सती-प्रथा बंद करने का कानून बना था। इसके एक सदी बाद दूसरा कानून बना जिसके अनुसार शादी के लिए लड़कों की कम से कम उम्र 18 साल और लड़की की उम्र 14 वर्ष निर्धारित की गई। इसके बाद फिर एक दूसरे कानून ने दहेज लेने और देने की प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 17 की एक टिप्पणी के अनुसार 'छूआछूत' को समाप्त कर दिया गया है और आज अछूत या "अस्पृश्यता" की प्रथा कारागार की सजा के योग्य दंडनीय अपराध है।

जब कानून और समाज की प्रथाएँ परस्पर विरोधी हो तो कानून को समाज में परिवर्तन के एक उपकरण के रूप में कार्य करने की पूरी पूरी स्वतंत्रता और पूर्ण अधिकार है।

फिर भी कोई भी कानून अकेले ही सामाजिक बदलाव या सुधार नहीं ला सकता। उसे समाज के वर्गों और विशेष रूप से जनसमुदाय (लोगों) से भी पूर्ण समर्थन और सहयोग प्राप्त होना चाहिए।

जनमत परिवर्तन का प्रबल जरिया होता है। कानून अकेले परंपराओं और रूढ़ियों की विद्यमान प्रणालियों को नहीं बदल सकता। यही कारण है कि सती प्रथा, बाल-विवाह, दहेज प्रथा और अस्पृश्यता जैसी बुराइयों पर प्रतिबंध के लिए कानून होते हुए भी वे अभी भी हमारे देश में जड़ जमाए हुए हैं। इन सीमाओं के होते हुए भी कानून समाज में सामाजिक-आर्थिक तथा राजनैतिक सुधार लाने का प्रभावशाली साधन आज भी है। समाजशास्त्रियों ने कानून के निम्नांकित कार्य दर्शाए हैं:

(1) परिवर्तन का प्रदर्शक

(2) परिवर्तन का प्रवर्तक

(3) परिवर्तन का संवर्तक

चुनाव अथवा निर्वाचन की भूमिका: कानून के अलावा, वोट देने का अधिकार

और चुनावों की भूमिका भी सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण तत्व हैं। वोट देने का अधिकार लोगों की उन के मामलों में रुचि बढ़ाता है और यह जन-समुदाय को शिक्षा देने का महत्वपूर्ण साधन है। राजनैतिक दल और उनके नेता इसे अपने मतदाताओं को महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक मसलों पर शिक्षित करने का एक सुअवसर बना लेते हैं। इसके अलावा इससे नागरिकों में स्वाभिमान और उत्तदायित्व की भावना पैदा होती है।

(1) निर्वाचन स्वयं विविध मसले पैदा कर देते हैं जिनके द्वारा गाँवों, राज्यों और संपूर्ण देश की समस्याओं, सामाजिक-आर्थिक दशाओं से संबंधित लक्ष्य और उद्देश्यों को उजागर किया जाता है।

(2) शासक और शासितों के बीच चुनाव (निर्वाचन) एक राजनैतिक संवाद कायम करते हैं। वे एक ऐसा साधन हैं जिनके द्वारा शासक लोग, लोगों की मांगों के प्रति सचेत हो उठते हैं। निर्वाचक और निर्वाचितों के बीच यह दुतरफा जागृति और संवाद सामाजिक परिवर्तन को दिशा दिखाता है।

पाठगत प्रश्न 17.4

(1) सामाने दिए गए कोष्ठकों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(अ) सती प्रथा सन्..... में प्रतिबंधित की गई थी। (1828, 1829)

(ब) भारतीय संविधान के अनुच्छेद..... ने अस्पृश्यता को समाप्त किया (17,27)

(स) चुनाव नागरिकों में .....की भावना पैदा करते हैं। (उदासीनता, उत्तरदायित्व)

17.6 सामाजिक परिवर्तन के आर्थिक कारक

आर्थिक कारक सामाजिक परिवर्तन की गुणवत्ता और दिशा को प्रभावित करते हैं। हम, पहले अपने विश्लेषण और अध्ययन से प्राप्त प्रमाणों के लिए एक सैद्धान्तिक विवेचन करके इन कारकों के प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

1. मार्क्स का दृष्टिकोण 2. औद्योगिकीकरण का प्रभाव

3. हरित क्रांति

मार्क्स का दृष्टिकोण: सामाजिक परिवर्तन के आर्थिक सिद्धान्त के मुख्य रचनाकार कार्ल मार्क्स हैं। उनका विश्वास है सामाजिक परिवर्तन मूल रूप से आर्थिक तत्वों का

प्रतिफल है। उत्पादन का ढंग समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनैतिक पक्षों का निर्धारण करता है।

मार्क्स ने समाज के विकास को कृषि से सामंतवाद, सामंतवाद से पूंजीवाद और अंततः समाजवाद में खोज निकाला। पूंजीवाद ने सामंतवाद में पैदा हुए अन्तर्विरोधों के कारण जन्म लिया। पूंजीवाद में निहित अन्तर्विरोधों के परिणामस्वरूप पूंजीवाद से समाजवाद उदित होता है।

उन दो वर्गों 'अधिपति' (उत्पादक इकाइयों के मालिक) तथा 'सर्वहारा' (उन इकाइयों में अधिपतियों के अधीन श्रमिक) के बीच उनके हितों के अनेक द्वंद्वात्मक उद्देश्यों के कारण परस्पर टकराने से एक वर्ग-संघर्ष उठ खड़ा होगा। श्रमिकों द्वारा पूंजीपतियों के विरुद्ध छेड़ी गई क्रांति पूंजीवाद की बुराइयों को समाप्त कर देगी और एक समाजवादी समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होगा। एक समाजवादी समाज एक आदर्श समाज होगा क्योंकि न कोई वर्ग रहेगा और न कोई संघर्ष। वर्गविहीनता तथा राज्य की सत्ता का लुप्त हो जाना- ये दो बातें एक समाजवादी राज्य के प्रमुख लक्षण हैं।

मार्क्स द्वारा निर्देशित अथवा अपनाई गई बातों के कुछ प्रमाण हमें औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया और प्रभाव पढ़ते समय मिलेंगें।

17.7 औद्योगिकीरण का प्रभाव

यूरोप में सत्रहवीं सदी में हुई औद्योगिक क्रांति धीरे-धीरे संपूर्ण विश्व में फैल गई उसकी गति चाहे विश्व के विभिन्न भागों में भिन्न रही हो, पर उसके परिणाम सभी जगह लगभग समान ही रहे। उनके निम्नांकित परिवर्तन ध्यान देने योग्य थे और जो एक स्तर तक स्थाई बने रहे; उनसे संबंधित कुछ बातें ये हैं:

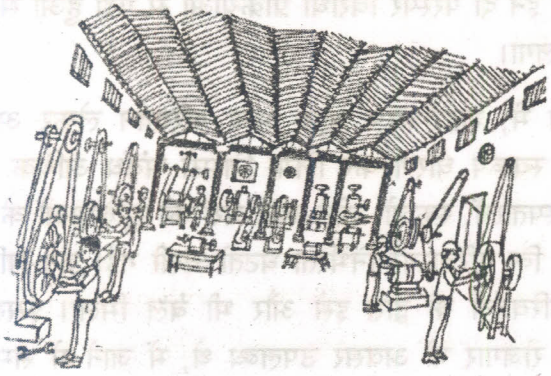

(1) उत्पादन घरों से निकलकर फैक्टरियों में होने लगा।

(2) उत्पादन-प्रक्रिया में पूंजी ने महत्ती भूमिका अर्जित की।

(3) कार्य-बल का व्यावसायिक ढाँचा अधिकांश कृषि क्षेत्र की अपेक्षा बढ़कर अधिक बड़े औद्योगिक कार्यबल के रूप बदल गया।

(4) समाज के सभी क्षेत्रों के लोग औद्योगिक गतिविधि में लग गए।

(5) बड़ी संख्या में महिलाएं भी घरों से निकल पड़ीं और उस कार्यबल में शामिल हो गईं।

(6) धर्म, विश्वास आदि की बाधाएं दूर हो गईं क्योंकि श्रमिकों की माँगे बढ़ गई।

(7) बड़े पैमाने पर शहरीकरण होने लगा।

(8) इससे मौजूदा सामाजिक ढाँचे को बड़े पैमाने पर बदलते हुए एक बड़ी संख्या में परिवहन तथा संचार जैसे अन्य क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों को बल मिला। इन सभी परिवर्तनों के सामाजिक संबंधों पर नाटकीय प्रभाव पड़े और इससे अमिट सामाजिक परिवर्तन घटित हुए।

(1) नारी-मुक्ति इस प्रक्रिया का एक तर्कपूर्ण निर्णय था। परिवारों के भीतर नारियों की भूमिका उनकी आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ बदलती गई।

(2) इसी के साथ उत्पादन संबंधों में भी परिवर्तन हुआ। 'नियोक्ता' और 'कर्मचारी' के बीच में नातेदारी के संबंधों की अपेक्षा एक बड़े पैमाने पर ऐसी अवैयक्तिक संबंधशीलता स्थापित हुई जिसमें नौकरी का प्रमुख मापदंड वफादारी न होकर कार्यकुशलता हुई।

(3) जाति बंधन कमजोर पड़ गए कम से कम शहरी केंद्रों में विभिन्न जातियों और धर्मों के श्रमिक उत्तरोत्तर बिना हिचक के मिल जुल कर काम करने लगे। वहीं दूसरी ओर में, घनिष्ठ परिवारिक तानेबाने के अभाव में, राज्य और जाति संगठन पैदा हुए और इन दो परस्पर विरोधी प्रक्रियाओं से पैदा हुआ सामाजिक परिवर्तन दिखाई दने लगा।

(4) अपने उत्थान में, शहरीकरण कुछ अन्य परिवर्तन लेकर आया। लेन-देन ने व्यावसायिक स्वरूप धारण कर लिया जिससे संबंध अधिक अवैयक्तिक होते चले गए। अस्पतालों, स्कूलों, छोटे-छोटे घरों की सुविधाओं के प्रावधान का यह मतलब हुआ कि परिवारपर निर्भरता घटती चली गई। जन-परिवहन प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तनों के द्वारा इसे और भी बल मिला। इससे लोग सुदूरवर्ती स्थानों, जहाँ रोजगार के अवसर उपलब्ध थे, में जाने में समर्थ हुए।

(5) अंतत: दिहाड़ी कमाने वालों तथा स्वरोजगार में लगे लोगों के शहरी केन्द्रों समाज में एक विशाल एवं सशक्त मध्यम वर्ग की उत्पत्ति हुई। इस वर्ग ने मौजूदा सामाजिक संबंधों को ही प्रभावित नहीं किया अपितु प्रजातंत्र, योग्यता तथा समता के विचारों के पक्षधर राजनैतिक संवाद को भी प्रभावित किया।

17.8 हरित क्रांति

यूरोप में और पश्चिम के अधिकांश भागों में कृषि ने जन और धन (पूंजी) दोनों सुलभ करा कर औद्योगिक क्रांति को संभव बनाया। भारतीय संदर्भ में किसी तरह, औद्योगीकरण अधिकांश रूप से शासकीय नीति का प्रतिफल था। विकास के रुसी मॉडल से प्रेरित होकर भारत की द्वितीय पंचवर्षीय योजना में बड़े पैमाने पर औद्योगिक परियोजनाएं बनाने के लिए भारी संसाधनों का प्रावधान किया गया। औद्योगीकरण की प्रक्रिया से पहले कृषि क्षेत्र में क्रांति हो जानी चाहिए थी, पर उसका कहीं अता-पता नहीं था।

जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है वैसे ही खाद्य-सामग्री की मांग बढ़ती है। भारत को अपने बढ़ते हुए लाखों-करोड़ों लोगों की खाद्यान्न-पूर्ति के लिए इसके आयात पर निर्भर रहना पड़ता था। इस स्थिति ने बढ़ती हुई कृषि उत्पादकता की ओर निकट से देखने की चेतावनी दी अर्थात कृषि-उत्पाद बढ़ाने की लालसा उत्पन्न हुई और परिणामस्वरूप अंतत: इससे भारत खाद्यान्न में आत्म-निर्भर बन सका। इस पहल को पारिभाषिक शब्दावली में ''हरित क्रांति'' कहा गया। कृषि के क्षेत्र में नाटकीय परिवर्तन लाने के कारण इसे यह नाम दिया गया। अब हम 'हरित क्रांति' के द्वारा सामाजिक संबंधों पर पड़े प्रभाव की जांच-पड़ताल करेंगे और विश्लेषण करेंगे कि यह किस तरह सामाजिक परिवर्तन को लाने में सफल हुई।

देश के चुने हुए क्षेत्रों में सन् 1960 के दशक के अंत में भारत में हरित क्रांति प्रारंभ हुई। इस स्तर पर गेहूँ पर ध्यान केन्द्रित किया गया और अपनाई गई रणनीति में खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए पूंजी और प्रोद्योगिकी दोनों का सम्मिलित उपयोग किया गया। उधार, मशीनें, ऊँची पैदावार वाले बीज, सिंचाई और उर्वरक भूमि की ही भांति, प्राय: निर्णायक लागत बन गए। बड़े-बड़े फार्मों को महत्व दिया गया क्योंकि वे मशीनीकृत खेती के लिए उपयुक्त थे। परिणाम बहुत चौंकाने वाले हुए क्योंकि खेती की उपज उम्मीद से की गई पैदावार को भी पीछे छोड़ गई और भारत शीघ्र ही एक खाद्यान्न आयातक से एक स्वतंत्र भंडारण करने वाला देश बन गया।

यद्यपि उत्पादन पूर्व की अपेक्षा बहुत अधिक हुआ तो भी इसका प्रतिफल सभी प्रांतों और समाज के सभी वर्गों के लिए आवश्यक रूप से उतना सकारात्मक नहीं रहा।

1. बड़े लंबे-चौड़े फार्मों और पूंजी की बढ़ती हुई महत्ता का विशिष्ट लाभ समाज के उस वर्ग को हुआ जिसके पास ये दोनों साधन थे। भूमि पर आधारित संबंधों के कारण एक 'मालिक' और 'नौकर' के सामान्यत: ऐसे संबंध सृजित हुए जैसे प्राय: औद्योगिक क्रियाओं में होते हैं।

2. क्योंकि भूमि-सुधार कार्यक्रम देश के प्राय: विभिन्न चुनिंदा भागों में ही चलाए गए इसलिए हरित क्रांति भी उन्हीं कुछ चुनिंदा प्रांतों तक ही सीमित रही जहाँ ये कार्यक्रम चलाए गए थे। फलत: इससे मौसमों के अनुसार बड़े पैमाने पर पलायन होने लगे जैसे बिहार, उड़ीसा और उत्तरप्रदेश से लोग फसलों के समय पर पंजाब तथा हरियाणा आने लगे जो हरित क्रांति के केन्द्र बने थे समाजशास्त्रीय भाषा में उड़ीसा, बिहार और उत्तरप्रदेश के इन परिवारों के 'कर्त्ता' वर्ष के अधिकांश भाग में अब अपने गाँव से अनुपस्थिति रहने लग गए। इसका पारिवारिक संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

3. इसके अतिरिक्त, एक और विशिष्ट परिणाम यह हुआ कि सामान्यत: राज्यों के बीच में तथा विशेष रूप से ''भूपति'' और ''भूमिहीनों'' के बीच में असमानता और बढ़ गई। अंतत:, मध्यवर्ती जातियां जिनको जमीनों के सुधार कार्यक्रमों के चालू होने से अधिक भूमि सुलभ हुई थी वे इस परिवर्तन से सर्वाधिक लाभान्वित हुए और धीरे-धीरे वे लोग भारतीय राजनीति में एक प्रभावशाली शक्ति बन कर उदित हुए।

पाठगत प्रश्न 17.5

''सही'' और ''गलत'' के रूप में उत्तर दीजिए।

अ. पूंजीपति लोग उत्पादन स्रोतों के स्वामी थे। ( )

ब. औद्योगिक क्रांति के जागरण से उत्पादन-संबंध अधिक अवैयक्तिक बन गए। ( )

स. औद्योगिक क्रांति के बाद एक सबल मध्यम वर्ग शहरी केन्द्रों में उभरा। ( )

द. हरित क्रांति पहले बिहार और उड़ीसा राजयों में प्रारंभ हुई। ( )

17.9 सामाजिक परिवर्तन के एक कारक के रूप में शिक्षा

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जबकि एक ओर यह परंपराओं, संस्कृति, ज्ञान और कौशल को, एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करती है तो दूसरी ओर यह सामाजिक परिवर्तन के एक एजेंट के रूप में कार्य करती है। नए विचार और जीवन-मूल्य इसके द्वारा प्रारंभ किए जाते हैं और वही युवा पीढ़ी के लिए अनुसरण करने तथा प्राप्त करने के लिए एक लक्ष्य बन जाया करते हैं।

किसी समाजशास्त्री ने शिक्षा की परिभाषा करते हुए कहा है कि "शिक्षा प्रौढ पीढ़ी के लोगों द्वारा जो अभी प्रौढ़ नहीं हुए, उन पर लागू किया गया प्रभाव (दबाब) है। इसका लक्ष्य बालक में उन शारीरिक, बौद्धिक तथा नैतिक अवस्थाओं को जाग्रत और विकसित करना है जिसकी अपेक्षा उससे समग्र समाज एवं तात्कालिक सामाजिक वातावरण दोनों करते हैं। इस प्रकार समाज को शिक्षा के द्वारा दो लक्ष्य प्राप्त होते हैं:

1. व्यक्ति को सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप सामाजिक बनाना, ढालना तथा विकसित करना; और
2. आधुनिक अर्थ-व्यवस्था के अनुसार उद्योग और प्रौद्योगिकी में विशिष्ट कौशलों के लिए मानव-संसाधनों से संबंधित प्रशिक्षण जैसी सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा

इससे पहले कि हम सामाजिक परिवर्तन के एक तत्व के रूप में शिक्षा की भूमिका का वर्णन करें, शिक्षा प्रणाली के दो विभिन्न रूपों 'औपचारिक' और 'अनौपचारिक' को समझ लेना महत्वपूर्ण है। जो शिक्षा एक विधिवत स्थापित संस्था में प्रदान की जाती है उसे औपचारिक शिक्षा कहते हैं और जिसे एक व्यक्ति अपने दैनिक क्रिया-कलापों, परस्पर चर्चाओं द्वारा घर में या समाज में ही सीखता है या प्राप्त करता है उसे 'अनौपचारिक' कहते हैं।

अनौपचारिक शिक्षा उन समाजों में मिलती है जहाँ उपयुक्त नियमित विद्यालय नहीं हैं, या उनका अभाव है, अथवा जहाँ औपचारिक विद्यालयी-व्यवस्था अभी अविकसित या अधूरी है। आदिवासी और कृषक समाजों में यह स्पष्ट तौर पर होता है। इन समाजों में बालक भाषा, परंपरागत रीतियाँ, कहानियाँ, लोकगीत, संगीत तथा उत्पादक कौशल, जैसे पशु चराना, बुवाई करना आदि अपने परिवार के लोगों को देखकर अथवा उनसे परस्पर चर्चा करके सीखते हैं।

उन्नतिशील परिवारों में बच्चे स्कूलों में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ अनौपचारिक शिक्षा भी प्राप्त करते हैं। उदाहरणत: अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार और सामाजिक कौशल तो परिवार के लोगों तथा अन्य निकटवर्ती (वातावरण के) लोगों के व्यवहार को देखकर ही अर्जित किए जाते हैं।

आधुनिक शिक्षा को आज हम जिस रूप में जानते हैं, औपचारिक शिक्षा उस की विशिष्टता है। इसके प्रमुख अंग निम्नानुसार हैं:

1. नियमित और मान्यता प्राप्त विद्यालय;
2. निश्चित और उचित तरीके से निर्धारित विषयसामग्री और
3. निश्चित नियम और विनियम।

अब हम सामाजिक परिवर्तन के तत्व के रूप में शिक्षा की भूमिका पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं पर शिक्षा के प्रभाव को हम निम्नांकित के अध्यन से ही जाँच-परख सकते है:

1. समाजीकरण और सामाजिक नियंत्रण;
2. मानव संसाधानों का विकास और सामाजिक स्तरीकरण तथा
3. राजनैतिक शिक्षा

17.10 समाजीकरण और सामाजिक नियंत्रण

प्रत्येक समाज का अपना इतिहास, विरासत और संस्कृति होती है जिसे वह सुरक्षित रखने का प्रयत्न करता है। उन्नति के लिए समाजों के अपने कुछ लक्ष्य होते हैं। स्कूल के पाठयक्रम के माध्यम से समाज इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास करते हैं। स्कूल बच्चों को एक स्थापित नैतिक पद्धतियों के अनुकूल शिक्षित करते हैं और उन्हें समाज और अंततोगत्वा, विश्व की बदलती हुई परिस्थितियों से तालमेल रख सकने हेतु तैयार करते हैं।

17.11 मानव संसाधनों का विकास

शिक्षा मानव ससाधनों के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह व्यक्तियों को समाज के लिए वांछित उपयुक्त ज्ञान तथा कौशल सिखाती है ताकि वे समाज में महत्वपूर्ण भूमिकाओं के निर्वाह हेतु स्वयं को समर्थ पा सकें।

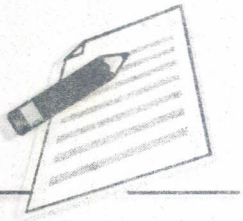

साधारण समाजों में, परिवार उत्पादन की मूल इकाई थी। व्यक्ति घर पर ही परिवार के व्यवसाय के लिए वांछित हुनर सीखते थे। इन कौशलों तथा हुनरों में बढ़ईगीरी, हस्तकारी, आभूषण-निर्माण, धातुओं का कार्य/कृषि तथा अन्य संबंधित क्रियाएँ आती थीं। पर ज्यों ही समाज विविधता और जटिलता में आगे आए बहुत प्रकार के विशिष्ट हुनरों की आवश्यकता वाले बहुत प्रकार के व्यवसाय पैदा हो गए। ये अब घरों पर ही नहीं सीखे जा सकते थे। अत: समाजों ने अपनी शिक्षा पद्धतियों के माध्यम से इनकी बढ़ती हुई मांगों की पूर्ति की कोशिश की।

वर्तमान शिक्षण संस्थाओं में विविध प्रकार के विशिष्ट विषय जैसे चिकित्सा (भेषज) विज्ञान, जन-स्वास्थ्य, इंजीनियरिंग, प्रबंधन-विधि, फोरेंसिक साइंस, भौतिकी, जैविकी, कृषि तथा समाज-विज्ञान, पढ़ाए जाते हैं। इस प्रकार, शिक्षा व्यक्ति की योग्यताओं के लिए उपयुक्त सामाजिक स्तरों के निर्धारण एवं वितरण को सुनिश्चित करती है। (शिक्षा के अनुरूप व्यक्ति को समाज में श्रेणियाँ प्राप्त होती हैं।) यह व्यक्तियों को अपनी क्षमताओं को पहचानने का अवसर प्रदान करता है तथा अपने पूर्वजों के व्यवसायों से मुक्त करता है। एक शिक्षा पद्धति जो 'योग्यता धार्मिकता' 'मेरिटोक्रेसी' को बढ़ावा देती है। वह योग्य लोगों को समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए समर्थ बनाती है।

विशेषज्ञताधर्मी शिक्षा और प्रौद्योगिकी और परिवहन में हुए भारी बदलावों से भौगोलिक गतिशीलता को बढ़ावा मिला है और लोगो को उसने इस योग्य बनाया है कि वे लंबी-लंबी दूरियां पार करके अपने हुनर या कौशल का उपयोग कर सकें। भारत से पश्चिम में जा पहुँचे बड़ी संख्या में साफ्टवेयर इंजीनियर, आधुनिक शिक्षा के द्वारा नए द्वार खोले जाने ओर नए और लाभप्रद अवसर सुलभ कराये जाने के प्रबल प्रमाण हैं।

कैसे भी हो, एक बात ध्यान देने योग्य है कि आज वर्तमान शिक्षा पद्धति तथा व्यावसायिक गतिशीलता के बूते लोगों को आर्थिक और समाजिक उन्नति हासिल हुई है तथा उपलब्धियाँ अर्जित करने के नए-नए रास्ते मिले हैं, पर इससे पढ़े लिखे और अनपढ़ वर्गों के बीच में एक सामाजिक असमानता बढ़ी है। इसी के साथ यह भी अब असामान्य बात नहीं है कि एक परिवार के विभिन्न लोग विभिन्न व्यवसायों में लगे हैं और परिणामत: उनके सामाजिक स्तर भी भिन्न-भिन्न हो गए हैं।

शिक्षा राजनैतिक जागरूकता भी लाती है। शिक्षा के माध्यम से सरकारें परस्पर समरसता तथा एकता बनाए रखने के लिए, नागरिकों को अपने राष्ट्रीय लक्ष्य समझाने का प्रयास करती हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को अपने अदभुत इतिहास

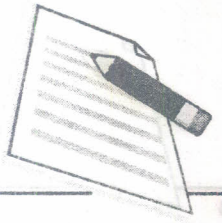

Notes

तथा संस्कृति से परिचित कराती हुई जनतंत्र, स्वतंत्रता तथा समानता के आदर्शों को लाकप्रिय बनाने का प्रयास करती है। स्कूल के पाठ्यक्रमों के परिवर्तन के विषय में बहस का एक नया मुद्दा राजनीतिक विचारधारा को स्वरूप देने में शिक्षा की भूमिका का भी है।

प्रत्येक समाज में सामाजिक परिवर्तन एक सतत और अनंत प्रक्रिया है। परंपरागत, तथा आधुनिक सभी समाज, लगातार उदित हो रहे हैं। ये परिवर्तन, प्राय: धीरे-धीरे होते हैं और जब तक हम भीतर झांक कर विश्लेषण करने का प्रयास नहीं करते तब तक वे मुश्किल से ही दिखाई देते हैं। कुछ भी हो अवसर के अनुसार ऐसी घटनाएँ घटती हैं जो समाज में नाटकीय और आकस्मिक परिवर्तन ला देती हैं।

इतिहास में कुछ ऐसे भी क्षण रहे हैं जब एक अकेले व्यक्ति, जैसे गांधी अथवा लेनिन ने, राष्ट्र और समाज की धारा बदल डाली है।

पाठगत प्रश्न 17.6

1. एक एवं दो वाक्यों में उत्तर दीजिए:

अ. शिक्षा की परिभाषा लिखिए।

ब. औपचारिक शिक्षा के लक्षण कौन-कौन से हैं?

स. विद्यालय का पाठ्यक्रम बालकों को किस तरह सामाजिक बनाता है?

आपने क्या सीखा

- सामाजिक परिवर्तन एक स्थाई स्थिति है और सभी समाजों और सभी कालों में घटित होता है। इसकी गति धीमी हो सकती है ओर यह प्राय: दिखाई नहीं देता अथवा यह अचानक और नाटकीय हो सकता है।
- प्रोद्योगिक प्रगति जन्म-मृत्यु सांख्यिकीय परिवर्तन, सांस्कृतिक प्रसार। आर्थिक और शैक्षिक, समाज में ढाँचागत संबंधों को बदल देते हैं और सामाजिक परिवर्तन लाते हैं। ये कारक प्राय: मेल-मिलाप में कार्य करते हैं और परिणामत: या तो क्रमिक परिवर्तन होता है अथवा कभी-कभी समानांतर भी।
- जनसंख्या में दोनों प्रकार के संख्या में तथा संरचना में, घटित परिवर्तनों के

दूरगामी प्रभाव सामाजिक संबंधों पर होते हैं और वे सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारण बनते हैं जो हमें स्पष्ट दिखाई देते हैं।

- प्रौद्योगिकी हमारे वातावरण को परिवर्तित करके समाज को बदल देती है जिसके फलस्वरूप हम इसे अपना लेते हैं या उसके आदी हो जाते हैं। यह परिवर्तन प्राय: भौतिक वातावरण (परिवेश) में होता है और इन परिवर्तनों के साथ हम जो तालमेल बिठा लेते हैं वह हमारी संस्कृति और सामाजिक संस्थाओं को बदल देता है।
- सामाजिक प्रथाएँ, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से, हमारे सांस्कृतिक मूल्यों से निर्मित हुई हैं और नैतिक मूल्यों अथवा सामाजिक समुदायों की रूढ़ियों में होने वाला कोई भी परिवर्तन सामाजिक संस्थाओं पर प्रभाव डालता है। नए सामाजिक मूल्य तथा विश्वास भी सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं।
- विधि (कानून), जनमत तथा निर्वाचन-प्रक्रिया भी सामाजिक परिवर्तन के एक उपकरण (यंत्र) के रूप में कार्य करते हैं।
- उत्पादन-प्रणाली में परिवर्तन उत्पादन-संबंधों पर प्रभाव डालते हैं और सामाजिक परिवर्तन में योगदान देते हैं। औद्योगीकरण ने जाति-प्रथा को शिथिल करने तथा समाज में महिलाओं की भूमिका बदलने में बड़ी भूमिका निभाई है। इसी तरह, हरित क्रांति ने अन्य राज्यों तथा जातियों की अपेक्षा कुछ राज्यों और जातियों को अधिक संपन्न (धनी) बनाते हुए सामाजिक परिवर्तन में योगदान दिया है।
- शिक्षा मानव संसाधनों के विकास, स्तरीकरण तथा राजनीतिक शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के एक एजेन्ट का कार्य करती हैं। इसके द्वारा सुझाए गए नए विचार और नैतिक मूल्य युवा पीढ़ी के लिए अनुसरण किए जाने और उन्हें प्राप्त करने के लिए लक्ष्य बन जाया करते हैं। यह युवाओं में जिज्ञासा का वह भाव पैदा करती है। जो आगे चलकर महान सामाजिक परिवर्तन ला देता है।

पाठांत प्रश्न

1. सामाजिक परिवर्तन पर जन्म-मृत्यु सांख्यकी (डेमोग्राफी) के प्रभाव का वर्णन करो।
2. औद्योगिक समाज साधारण समाजों से भिन्न कैसे हैं?
3. सामाजिक परिवर्तन के एक साधन के रूप में प्रसार (विस्तार) की भूमिका बताइए।
4. सामाजिक परिवर्तन में चुनावों की भूमिका को उजागर कीजिए।

5. औद्योगीकरण के सामाजिक-आर्थिक परिणामों को समझाइए (लिखिए)।

6. भारत में 'हरित क्रांति' ने सामाजिक परिवर्तन का पथ कैसे प्रशस्त किया?

7. सामाजिक परिवर्तन लाने में शिक्षा की भूमिका का वर्णन कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

(अ) सही (ब) गलत

17.2

(अ) शारीरिक (ब) लाभ (स) विश्व

17.3

(अ) दीन-ए इलाही (ब) प्रसार (विस्तार)

(स) धर्म, विचार धारा, विश्वास

17.4

(अ) 1829 (ब) 17 (स) उत्तरदायित्व।

17.5

(अ) सही (ब) सही (स) सही (द) गलत

17.6

1. शिक्षा बालक में समग्र समाज और निकटतम सामाजिक वातावरण-दोनों के द्वारा उसके लिए आवश्यक शारीरिक, बौद्धिक, तथा नैतिक दशाओं में जाग्रति और विकास करना है।'

2. औपचारिक शिक्षा के लक्षण निम्नानुसार हैं

   1. नियमित और मान्यता प्राप्त विद्यालय।
   2. निश्चित और सुस्पष्ट विषयसामग्री।
   3. निश्चित नियम और विनियम।

3. विद्यालय अपने पाठ्यक्रम के द्वारा बालकों को वास्तविक विश्व की समस्याओं जैसे युद्ध, गरीबी, एड्स तथा बेरोजगारी के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास करते हैं।